ओमशान्ति मीडिया

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विशेषांक

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 26 | जून -I- 2024 | अंक - 05 | माउण्ट आबू | Rs.-12

सत् धर्म की पुनर्स्थापना में हर मानव ज़िम्मेदारी ले : ब्रह्माकुमारीज़

श्रीनगर गढ़वाल में 'श्रीमद्भगवद्गीता महासम्मेलन' बड़ी संख्या में संत समाज ने की शिरकत

महासम्मेलन में...

श्रीमद्भगवद्गीता को पढ़ने तथा उन विचारों को अपने जीवन में उतार कर पूरे संसार में एक खुशहाली का संदेश देने का सभी वक्ताओं द्वारा किया गया आह्वान

श्रीनगर गढ़वाल-उत्तराखंड। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सर्राफा धर्मशाला श्रीनगर में आयोजित श्रीमद्भगवद्गीता महासम्मेलन में विभिन्न पीठों के जगद्गुरु एवं महामंडलेश्वर समेत पूरे गढ़वाल भर के मठ-मंदिरों के पुजारियों एवं माई-संतों का सम्मान किया गया। इसके साथ ही वक्ताओं द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता को पढ़ने तथा उन विचारों को अपने जीवन में उतारकर पूरे संसार में एक खुशहाली का संदेश देने का आह्वान किया गया।

महासम्मेलन में अयोध्या से आये धर्मचक्रवर्ती महायोगी जगद्गुरु स्वामी ओंकारानंद महाराज ने कहा कि गीता का ज्ञान ईश्वरीय सौगात से कम नहीं है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा जो ईश्वरीय ज्ञान बांटकर आज विश्व भर में अलख जगाने का प्रयास किया जा रहा है, वह सराहनीय है। उन्होंने कार्यक्रम में बुलाने पर आयोजकों का आभार प्रकट किया। संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू से आईं वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वक्ता राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. ऊषा दीदी ने कहा कि जब अधर्म होता है तो सत्धर्म की पुनर्स्थापना का समय आता है। अब सत्धर्म की पुनर्स्थापना का समय आ गया है। इसलिए गीता में परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान का प्रवाह होना ज़रूरी है। सारी सृष्टि को पावन बनाने के लिए परमात्म-ज्ञान को धारण करके एक परिवर्तन आरंभ करना होगा। यह तभी संभव है जब एक-एक व्यक्ति खुद से ज़िम्मेदारी ले, इससे एक से अनेक परिवर्तन समाज के भीतर होंगे और धीरे-धीरे सत्धर्म की स्थापना होगी। इस मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीकृष्ण जन्मभूमि निर्माण न्यास वृन्दावन आचार्य देवमुरारी बापू, वरिष्ठ महामंडलेश्वर अनंत विभूषित जगद्गुरु स्वामी यतीन्द्रानंद गिरी महाराज जूना अखाड़ा जीवनदीप पीठाधीश्वर रुड़की,

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पूरे विश्व में ईश्वरीय ज्ञान देकर अलख जगाने का प्रयास सराहनीय - स्वामी ओंकारानंद महाराज,अयोध्या।

बालाजी धाम हरिद्वार से महामंडलेश्वर स्वामी प्रबोधानंद गिरी महाराज, प्रसिद्ध समाजशास्त्री महाराष्ट्र से पूर्व आई.ए.एस स्वामी कमलानंद आदि महानुभावों ने अपने विचार रखे। संस्थान के अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने पवित्र सृष्टि बनाने में सभी से गगआगे आने का आह्वान करते हुए कार्यक्रम में पहुंचे सभी लोगों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारीज़ के क्षेत्रीय निदेशक राजयोगी ब्र.कु. मेहरचंद भाई व ब्र.कु. नीलम बहन ने किया। इस मौके पर ब्र.कु. रानी बहन,सहारनपुर द्वारा सभी को राजयोग की अनुभूति कराई गई। माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. नितिन भाई ने आध्यात्मिक गीतों की प्रस्तुति से सभी का मनोरंजन किया। ब्र.कु. ऊषा बहन असन्ध द्वारा सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया गया। कार्यक्रम में ब्र.कु. करमचंद, ब्र.कु. मुकेश अयोध्या सहित बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मौजूद रहे।

'मेडिटेशन' में छिपा है मनुष्य के हर मर्ज का इलाज

- शांतिवन में दस दिवसीय थ्रीडी कैड प्रोग्राम का सफल आयोजन, देशभर से पहुंचे हृदयरोगी

फैक्ट

1998 में की गई थी कैड प्रोग्राम की शुरुआत

12 हज़ार हृदय रोगी अब तक हुए ठीक

- यहां हृदय रोगियों को कहा जाता है 'दिलवाले'
- कैड प्रोग्राम से ट्रेनिंग लेकर अब तक हज़ारों हृदयरोगी हुए ठीक
- व्यायाम, संतुलित भोजन का महत्व और राजयोग मेडिटेशन सिखाया जाता है
- कई मरीज़ों के 90 फीसदी तक ब्लॉकेज खुले, एंजियोग्राफी की ज़रूरत नहीं पड़ी

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मेडिकल विंग के तहत संचालित थ्रीडी कैड प्रोग्राम के दस दिवसीय ट्रेनिंग प्रोग्राम का शुभारंभ मनमोहिनीवन परिसर के ग्लोबल ऑडिटोरियम में किया गया। शुभारंभ पर ग्लोबल हॉस्पिटल के चिकित्सा निदेशक डॉ. ब्र.कु. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि आप सभी प्रशिक्षणार्थी दस दिन तक ट्रेनिंग में बताई जा रही बातों का पूर्णतः पालन करेंगे तो पूरा जीवन स्वस्थ रहकर बिताया जा सकता है। यहां से ट्रेनिंग लेने के बाद एक नहीं बल्कि हज़ारों ऐसे लोग हैं जिनका जीवन पूरी तरह से बदल गया है। कैड प्रोजेक्ट के को-ऑर्डिनेटर व हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सतीश गुप्ता ने बताया कि विभिन्न शोध में पाया गया है कि 95 फीसदी बीमारियों का कारण हमारा मन है। मन की बीमारियों जैसे- जल्दबाज़ी, चिंता, गुस्सा, डर, डिप्रेशन, हाईपरटेंशन, असंतोष व नकारात्मक विचारों से मन बीमार हो जाता है। जैसे मन में विचार होते हैं वैसा ही इनका शरीर पर प्रभाव पड़ता है। धीरे-धीरे यह शरीर में विकृति (बीमारी) का कारण बनते हैं। इन सभी मानसिक विकृतियों का मुख्य कारण गलत जीवनशैली है। सिर्फ मेडिटेशन से ही मन के सभी प्रकार के रोगों का उपचार संभव है। आध्यात्मिकता में रिसर्च कर इस पद्धति का विकास किया गया है, जो हृदय एवं डायबिटीज़ के रोगियों के लिए वरदान साबित हुई है। इसका उद्देश्य हृदय रोगियों को बिना बायपास सर्जरी और ऑपरेशन के ठीक करना है। 1998 में शुरू किए गए इस थ्रीडी प्रोग्राम में प्रशिक्षण लेकर अब तक करीब 12 हज़ार से अधिक हृदय रोगी ठीक हो चुके हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान और मरीज के ठीक होने तक इन सभी को दिलवाले के नाम से पुकारा जाता है। इस मौके पर वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका डॉ. ब्र.कु. सविता दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताया। अजमेर सबज़ोन की निदेशिका ब्र.कु. शांता दीदी ने भी अपने विचार रखे। ब्र.कु. बाला बहन ने शब्दों से सभी का स्वागत किया। ब्र.कु. युगरतन ने हृदय स्पर्शी गीत प्रस्तुत कर सबका दिल जीता।

जैसा मन-वैसा तन, इस वाक्य पर वर्षों तक शोध और रिसर्च कर ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल प्रभाग ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है जिससे डॉक्टर्स भी अवभित हैं। इसे 'थ्री डायमेंशनल हेल्थ केयर प्रोग्राम फॉर हेल्दी माइंड, हार्ट एंड बॉडी (CAD)' प्रोग्राम नाम दिया गया।